Year-78

अगर आप बनारस जायें तो आपको वहाँ बाजारों में नाश्ते में हलुवा पूरी या परांठे ही मिलेंगे। बनारस के लोग पान भी बहुत खाते हैं इसलिए वहाँ की दीवारों पर पीक शैली में बने चित्रों की भरमार है, क्योंकि हमारा इस भाग का विषय केवल साग और परांठे हैं उस पर हम अगली फिल्म में चर्चा करेंगे।

फोड़े,फुंसी और कील मुंहासे साफ करने वाली दवाओं की मांग बढ़ती जा रही है । यह सब गोभी के परांठों की देन है । परांठे खाने से त्वचा में चिकनाहट बढ़ जाती है चिकनाहट ही कील मुंहासों की अम्मा है । परांठे खाकर कई लड़कियां चिकने हाथ मुंह पर मलती हैं इससे भी रोम छिद्र बन्द हो जाते हैं और त्वचा का रूप बिगड़ने लगता है सरसों का साग खाने के बाद गैस बनती है तो कुछ गैस खून में घुल कर त्वचा तक आ पहुंचती है।चिकनाहट के कारण रोम छिद्र बन्द हो जाते हैं और गैस त्वचा के नीचे बन्द हो जाती है जो फोड़े के रूप में उभरती है । इस तरह अब धीरे-धीरे भारत में नारी सौंदर्य की परिभाषा बदल रही है । एक दिन वह आयेगा जब किसी को कोई साफ चमड़ी वाली लड़की नजर आयेगी तो वह उसे भुतनी समझ बैठेगा ।

झोंपड़ी और महल
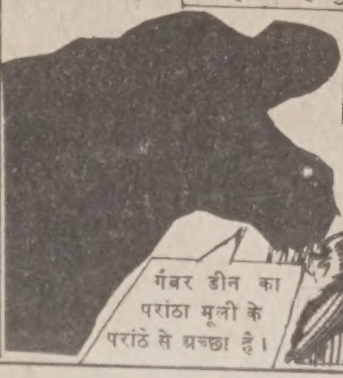
के सक्खर नामक शहर में एक धनी
ुष्य रहता था । रहने के लिए उसके
बड़े-बड़े महल थे । उसकी सेवा के
के पास बहुत से नौकर-चाकर थे ।
स किसी चीज की कमी नहीं थी ।
ी एक महल से दूसरे महल तक
ता था तो वह घोड़े पर चढ़ कर
ा ।

क दिन रात के समय वह धनी अपने
ल के सामने टहल रहा था कि सामने
ूढ़ा आता हुआ दिखाई दिया । बूढ़े
फटे हुए थे और वह अपने सिर पर
ाये हुए था । धनी मनुष्य को देखकर
पना भार धरती पर फेंक दिया और
रता हुआ बोला—'श्रीमान् जी !
क गया हूं ।

ा ?'

दि आप आज्ञा दें तो आपके यहां
ट लूं ?'

ह हमारा महल है, धर्मशाला नहीं

केवल आपकी घुड़साल के बाहर
गा । पौ फटते ही चला जाऊंगा ।

रन्तु यहाँ तुम्हारी देख-भाल कौन
'

झे किसी चीज की आवश्यकता नहीं

में क्या मालूम कि तुम कौन हो ।
व्य हमें रात भर तुम्हारा पहरा देने
लगाना होगा ।'

यों, महाराज ?'

सलिए कि रात को तुम कोई वस्तु
न भाग जाओ ।'

ाम-राम !' इतना कह कर बूढ़े ने
थ अपने कानों को लगाये और धनी
कार करने के बाद उसने अपना भार
उठा लिया और वह वहां से चल

त अंधेरी थी । आकाश में बादल छा
कभी-कभी कुछ बूंदा-बांदी भी होने

लगती थी । आंधी आने का डर था । बूढ़ा बुरी तरह से थक रहा था । उसके हाथ-पैर कांप रहे थे । चलना कठिन था परन्तु धनी मनुष्य के कटु शब्दों ने उसे ऐसा व्यथित किया था कि उसने अब सक्खर नगर के किसी भी शहरी के पास जाकर विश्राम करने का विचार छोड़ दिया । वर्षा जोरों से आ गई । जिस तरह रात का अंधकार बढ़ता जा रहा था उसी तरह बूढ़ा भी अपना भार उठाये हुए आगे ही चला जा रहा था ।

कुछ दिनों के बाद वह सिन्धी अमीर अपने मित्रों और सेवकों के साथ शिकार खेलने के लिए जंगल में गया । शिकार खेलते समय उसने अपना घोड़ा एक हरिण के पीछे लगा दिया । बहुत यत्न करने पर भी वह शिकार उसके हाथ नहीं आया । इस दौड़-धूप में वह अपने साथियों से बिछुड़ गया । घने जंगल में घुस जाने पर वह अपने नगर का मार्ग भी भूल गया और घंटों जंगल में भटकता रहा । इतने में रात हो गई । आँधी चलने लगी । बादल छा गये । कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो सिन्धी अमीर की कुछ भी सहायता करता । बेचारा थक कर चूर-चूर हो गया । जब उसे कोई मार्ग नहीं सूझा तो अपने घोड़े की पीठ से नीचे उतर कर वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गया ।

आंधी इतने जोरों से बढ़ने लगी कि जंगल के वृक्ष टूट-टूट कर गिरने लगे । तूफान के कारण अंधेरा बढ़ने लगा । हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था । प्रकृति के इस प्रकोप से घबरा कर घोड़ा अपने बचाव के लिए इधर-उधर भागने लगा । घोड़े का मालिक इतना थका हुआ था कि उसे कोई होश ही नहीं था ।

थोड़ी देर के बाद आंधी शांत हो गई । थोड़ी-थोड़ी वर्षा होने से चारों ओर की फैली हुई धूल बैठ गई । आकाश कुछ-कुछ साफ हो गया । सूर्य अभी छिपा नहीं था । उसकी धीमी-धीमी किरणों के प्रकाश में सिन्धी अमीर ने देखा कि उसका घोड़ा भी उससे जुदा हो गया था । यह घोड़ा उसने दो हजार रुपये में खरीदा था और बहुत चाव से पाला था । अब तो उस अमीर को घर पहुंचने की कोई आशा ही नहीं थी ।

कहते हैं कि सवेरा होने के आस-पास रात का अंधकार बहुत बढ़ जाता है । इसी तरह आशा और सुख की किरणों के पहुंचने से पहले निराशा और दुःख का अंधेरा भी बहुत अधिक होता है । बहुत अधिक दुःखी और निराश हो जाने पर उस सिन्धी अमीर को दूर से एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया । पहले तो वह डर गया कि कहीं कोई चोर या डाकू न हो परन्तु अब उस व्यक्ति ने पास आकर नमस्कार करते हुए अपने होंठों की मुस्कान से धनी मनुष्य के हृदय को शांत कर दिया तो निराश सिन्धी को आशा का प्रकाश दिखाई देने लगा । हंसते हुए उस व्यक्ति ने अमीर से पूछा—'आप इतनी घबराहट में क्यों हैं ?'

'साथियों के बिछुड़ने से, राह भटकने से और किसी सहायक के न मिलने से ।' ऐसा कहते-कहते अमीर ने अपनी सारी कथा सुना दी ।

निस्सहाय अमीर की करुणाजनक कहानी सुनकर उस व्यक्ति को उस पर दया आ गई । वह उसे अपनी झोंपड़ी में ले गया ।

शेष पृष्ठ ३४ पर

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

सज्जन कुमार मोर—डिमापुर : क्या चोर भी कभी अपने आपको बहादुर समझता है ?

उ० : जी हाँ, उस समय जब वह पुलिस की वर्दी में होता है।

विनय कुमार विश्वकर्मा—वाराणसी : मुझे दीवाना पढ़ने की ऐसी बीमारी है कि अगर मेरे सर में दर्द हो तो वह दीवाना पढ़ने से ही दूर होता है। बताइये क्या करूं ?

उ० : जहर को जहर काटता है। एक बीमारी का इलाज आप दूसरी बीमारी से कर लेते हैं। इसके अतिरिक्त और कुछ करने की जरूरत ही क्या है।

राजेन्द्र सिंह तलुजा—झरिया : जनता सरकार का अब तक का सबसे बड़ा कारनामा क्या है ?

उ० : आगरे की जूता इन्डस्ट्री को चार चांद लगाना। जनता पार्टी में या तो जूता चलता रहता है या जूतियों में दाल बंटती रहती है।

जगदीश सिंह—दिल्ली : मैं अगर हीरो बनना चाहूं तो कैसे बन सकता हूं ? क्या दिल लगाकर कोशिश करने से काम बनेगा ?

उ० : हीरो बनने के लिए दिल लगाने से काम नहीं बनता। इसके लिए 'चूना लगाने' और 'मसका लगाने' का आर्ट आना चाहिए।

खान निगार वारसी—शाहजहांपुर : सुना है आप एक फिल्म बना रहे हैं, क्या आप मेरे इस गीत को उसमें स्थान देंगे ?

दीवाना है एक शमा, हम सब इसके परवाने,
मोहन, अशरफ, जीन, हरी सिंह, सब इसके मस्ताने।
मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल या हों चाचा बातूनी,
काका चिल्ली सबके सब हैं खुशियों भरे खजाने।
पड़ी घसीटाराम पे यारो सबसे बड़ी मुसीबत,
घायल की गत घायल जाने और न कोई जाने।
हुआ अपहरण डायना का सब रह गये मुंह तकते,
तारा कीमो तक जा पहुंचे फैंटम उसे बचाने।
दुनिया की सब छोड़ के बातें हमने अब यह जाना,
दीवाना है खिला कमल अब चलेंगे दिल महकाने।

उ० : इसके पीछे और छुपे हैं कितने ही अफसाने।
पढ़कर आपका गीत लगे हम सर अपना खुजलाने।
कितना मुश्किल से बनता है इसका एक-एक पन्ना,
लगता है यह हम सबको भिजवाएगा पागलखाने।

एह० आई० भुल्ला—रत्नागिरी : मुझे बेचारे घसीटाराम पर दया आने लगी है। आप उसके साथ इतनी मारपीट क्यों दिखाते हैं ?

उ० वह खुद ही मुसीबत को दावत देकर बुलाता है और कहता है, आ बैल मुझे मार।

अनिल कुमार मधुकर—दिल्ली : एक और एक ग्यारह होते हैं, क्या आप इस हिसाब में विश्वास रखते हैं ?

उ० : इससे भी टेढ़े हिसाब पर विश्वास करना पड़ता है। जैसे एक बार हमारे पड़ोसी के घर चोर घुस आया और पड़ोसी और उसका बेटा चारपाई के नीचे घुस गये। बाद में हमने पड़ोसी के लड़के से पूछा, तुमने चोर का मुकाबला क्यों नहीं किया ? तो उसने उत्तर दिया। मुकाबला कैसे करता, चोर और लाठी दो थे और मैं और बाप एक।

के० बी० श्रीवास्तव—शाहजहांपुर : मैं ईश्वर से किस चीज की याचना करूं कि इस संसार रूपी समुद्र से तर जाऊं ?

उ० : इस बात की, कि आग में से गुजरें, तो आग जला न पाये। किसी शायर ने इश्क को जिन्दगी और जिन्दगी को इश्क मानकर कहा है :

ये इश्क नहीं आसां, बस इतना समझ लीजे,
एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।

राजेन्द्र कुमार अग्रवाल—पानीपत : चाचा जी, यदि कोई लड़की आप से शादी करना चाहे, तो आप क्या करेंगे ?

उ० : हम एक बार फिर दौड़ में फर्स्ट आ जायेंगे। जैसे एक बार एक आदमी ने दौड़ में फर्स्ट आने वाले एक खिलाड़ी से पूछा, 'क्या आप शादी शुदा हैं?' खिलाड़ी ने कहा, 'जी नहीं।' वह आदमी बोला, 'बड़े आश्चर्य की बात है। अगर आप की बीबी नहीं है, तो आपने इतनी तेजी से दौड़ना कैसे सीख लिया ?'

अरविन्द कुमार शर्मा—हरिद्वार : आप चिल्ली को हमेशा चतुर और विजयी क्यों दिखाते हैं ?

उ० : क्योंकि यह है ही इतना चतुर। इसके पेट में दाढ़ी है। यह जितना जमीन के ऊपर है, उतना ही जमीन के नीचे है।

मिर्जा रहमतउल्ला बेग—आजमगढ़ : मदहोश के दिमाग में कुछ गड़बड़ लगती है। आप डा० झटका से उसका इलाज क्यों नहीं करवा देते ?

उ० : डा० झटका के अपने दिमाग के बारे में आपका क्या विचार है ?

नवराज अधिकारी—विराट नगर नेपाल : चाचा जी, आप एक प्रश्न का उत्तर देने का क्या लेते हैं ?

उ० : राम का नाम लेते हैं और प्रार्थना करते हैं कि कम से कम एक बोरी भरकर रोज हमें आपके पत्र भिजवाता रहे।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी

यह लीला देवी ही लगती हैं, पर पहले से बड़ी पतली हो गई हैं।

कहो परोपकारी कैसे हो?
मैं तो ठीक हूं पर आप बड़ी दुबली हो गई हैं। बीमार-बीमार हो गई थीं क्या ?

नहीं, वैसे-तो मैं बिल्कुल ठीक हूँ, पर जो नोकर तुमने भेजा था न, वही मेरी बिमारी बन गया है।
हैं!

इतना परेशान करता है कि कुछ पूछो मत। दिन-रात उसके पीछे दौड़ना पड़ता है। जो काम देती हूं बाद में मुझे ही पूरा करना पड़ता है। वह तो किसी काम का नहीं।
ऐसी बात है तो

मैं उसे अभी चल के डांटता हूं, एक मिनट मे सीधा हो जाएगा।
नहीं परोपकारी, मैं सोचती हूँ एक-आद महीने जैसा है वैसा चलने दो, फिर उसे डांट कर ठीक कर देना।

उतनी देर में मेरा दो चार किलो वजन और कम हो जाएगा।
THE NATIVE

बात-बे बात की

अब गरमियाँ आ गई हैं, मैं शिमला अपने मायके जा रही हूं, अब संभालो अपना घर.

इस तरह अगर गुस्सा हो कर जा रही हो तो जाओ. मैं भी अपनी ससुराल चला-

-जाऊंगा और बच्चों को उनकी नानी-नाना के घर भेज दूंगा!

विनोद बड़े कमरे में आया···पिताजी और मांजी उसे देख कर मुस्कराए···मां ने कहा—

बैठो—।'

विनोद बैठ गया···थोड़ी देर मौन रहा ···फिर मां ने कहा—

'तुम्हारे पिताजी का और मेरा विचार है कि हम फूलवती को अपनी बहू बना लें।'

'जी—।' विनोद ने आँखें झुका लीं··· उसकी शंका ठीक निकली।

'इस बारे में पिताजी ने तुम्हारी राय जरूरी समझी है ···वैसे मैं कह रही थी कि विनोद फूलवती से शादी के लिए इंकार नहीं करेगा।'

'आप बड़े हैं—मेरा बुरा-भला समझते हैं···' विनोद ने भिंचे स्वर में कहा, 'मगर मुझे कुछ सोचने दें।'

'सोच लो।' मां ने मुस्कराकर कहा, 'मैं जानती हूं तुम्हारा उत्तर क्या होगा?'

विनोद चला आया···अब उसकी चिंताएं उत्कर्ष पर थीं···क्षण-भर के लिए उसे अपने पर हंसी आई···उसने सोचा कि कभी समय था जब वह भगवान से प्रार्थना किया करता था कि उसकी शादी फूलवती से हो जाए···और एक यह समय है कि जब उससे फूलवती से शादी करने के लिए आग्रह किया जा रहा है और वह अपना पीछा छुड़ाने के उपाय सोच रहा है—इतने में रघु अंदर चला आया···खाकी कमीज और पतलून में वह बिल्कुल रंगरूट लग रहा था···अंदर आते ही वह धम से विनोद के बिस्तर पर बैठ गया।

'क्या पढ़ रहे हो विनोद?'

विनोद झुंझला उठा···उसके सामने ही बैठा वह कुछ सोच रहा था और श्रीमान पूछ रहे हैं, क्या पढ़ रहे हो?—उसे टालने के लिए वह बोला—

'नहीं···सरिता की राह देख रहा हूं।'

'यार! यह सरिता भी अजीब लौंडिया है—।' रघु ने मुस्कराकर कहा।

विनोद केवल 'हूं हाँ' करके रह गया।

'तुम कुछ परेशान मालूम होते हो' सरिता ने ध्यान से उसे देखते हुए कहा।

'मैं बड़ी उलझन में हूँ···सरिता!'

'कैसी उलझन? मुझे बताओ शायद कोई हल सोच सकूं—लेकिन एक बात बता दूँ···उलझन इंसान के मन में तभी जन्म लेती है। जब उसका आत्मविश्वास समाप्त हो जाता है।'

विनोद को उसका स्वर बड़ा बुरा लगा। ···रघु और विषय ले बैठा।

'चलो—सिनेमा चल रहे हो।'

'नहीं—मुझे काम है।'

'लौंडिया को पढ़ाना है।' रघु ने ठहाका लगाया···लेकिन झट रुक गया क्योंकि उसने सरिता को आते देख लिया था।

वह सरिता को घूरने लगा···मगर एक बार ही सरिता ने रघु को कुछ इस ढंग से देखा कि रघु गड़बड़ा गया और कुछ कहे बिना बाहर निकल आया।

'गंवार मालूम होता है—।' सरिता ने बैठते हुए कहा।

'है तो गंवार ही।'

'सूरत से भी अच्छा नहीं लगता···मगर यह गया क्यों नहीं?'

विनोद ने उसके न जाने का कारण बता दिया।

'यह भविष्य में तुम्हारे लिए खतरा भी बन सकता है—।' सरिता ने गम्भीरता से कहा 'राधा भरोसे की लड़की नहीं है।'

'इस समय मेरी यही स्थिति है।'

'तब मुझे जरूर बताओ···मुझे पूरा विश्वास है कि मैं कोई सुझाव ढूंढ़ सकूँगी जिससे तुम्हारी कुछ चिंताएं कम को सकें—।'

सरिता एक अनोखी प्रकृति की लड़की थी···लेकिन विनोद अब उसकी प्रकृति से भली-भांति परिचित हो गया था। वह यह भी जानता था कि सरिता-जैसी लड़कियां कभी भी परेशान नहीं रह सकतीं क्योंकि संकल्प शक्ति इतनी दृढ़ थी कि स्वयं ही हर बात का हल निकल आता था···सम्भव है सरिता ही उसका कोई मार्ग दर्शन करे—विनोद ने उसको फूलवती वाली उलझन की सारी बात बता दी।

'साफ कह दो···यह भी कोई उलझन है—पिता जी और माँ कोई जबरदस्ती थोड़ी करेंगे।'

'मैं कैसे कह दूं···मेरा साहस नहीं होता।'

'विनोद! तुममें आत्मविश्वास का बड़ा

अभाव है···वह अभाव किसी समस्या पर व्यर्थ लम्बे समय तक सोचने से उत्पन्न होता है—जो कुछ करना है उसके बारे में कभी सोचना नहीं चाहिए क्योंकि अधिक सोच-विचार से संकल्पशक्ति डगमगा जाती है—जो करना है तुरन्त कर डालो···झगड़ा समाप्त···आरम्भ में थोड़ी-बहुत साहस की आवश्यकता पड़ती है···फिर आदत हो जाती है···।'

'अभी तो और कोई सुझाव बताओ, यह साहस उत्पन्न करने का प्रयत्न फिर करूंगा।'

'तब फिर तुम छोड़ो, यह मामला मैं हल कर दूंगी। सरिता ने बड़े विश्वास से कहा।

और विनोद सन्तुष्ट हो गया···वह सरिता को पढ़ाने लगा···पढ़ने के बाद जाने से पहले सरिता ने कहा—

'तुमने एक बात सुनी ?''

'नहीं तो···क्या है ?'

'मुहल्लेवाले मेरे चरित्र पर सन्देह करने लगे हैं···मेरे और तुम्हारे संबंध पर व्यर्थ झूठी अफवाहें उड़ाई जा रही है।'

'क्या ?' विनोद गड़बड़ा गया।

'लोग कहते हैं हमारे सबन्ध ठीक नहीं···।' सरिता के होठों पर विषैली मुस्कराहट उभर आई।

'ओह···यह तो बुरा हुआ।'

'यानी तुम घबरा गये···डरते हो दुनिया से···लेकिन मैं परवाह नहीं करती क्योंकि मुझे अपने और तुम्हारे ऊपर भरोसा है···और दुनिया वालों के कहने से हमारा भरोसा नहीं टूट जाएगा।'

यह कहकर वह उठ गई···बड़े कमरे में आकर वह माँ के पास रुक गई और स्पष्ट स्वर में बोली।

'आप विनोद की शादी फूलवती से करना चाहते हैं ?'

'हाँ हाँ···क्यों ?' माँ ने आश्चर्य से पूछा।

पिताजी भी उधर देखने लगे।

'लेकिन विनोद को यह शादी स्वीकार नहीं···आपसे कहने का उन्हें साहस नही पड़ता···आपको सोचना पड़ेगा कि बिना इच्छा की शादी का परिणाम क्या होता है ?'

सरिता ने उत्तर भी नहीं सुना···बस चुपचाप चली गई···पिताजी और माँ आश्चर्य से देखते रह गये, इस समय बड़ी बुआ भी वहीं थी···उन्होंने बुरा-सा मुंह बनाया—।

'अजीब लड़की है।' पिताजी ने आश्चर्य से कहा।

'अजीब काहे को···आवारा है आवारा···।' बुआ बोली—'ब्याह-शादी के मामलात में कुंवारी लड़कियां इस प्रकार पटापट बोला करती हैं क्या ?'

'चलो···तुम चुप रहो।' पिताजी को बुआ की बात बुरी लगी, 'पुराने और संकीर्ण विचार हैं तुम्हारे···।

बुआ माथे पर बल डाल कर चुप हो गई, माँ सोच रही थी कि विनोद और भला फूलवती से शादी से इन्कार करदे···यह कैसे हो गया ? लेकिन अधिक आश्चर्य ने उन्हें कुछ सोचने ही नही दिया।

सरिता विनोद के घर से निकल कर सीधी अपने घर की ओर बढ़ी···घर में उसकी माँ चुपचाप-सी थीं।सरिता को देखते ही माँ ने उसे ऊपर से नीचे तक घूरा···यह उसकी आदत हो गई थी कि जब भी सरिता घर से बाहर जाती वह बहुत चिंता से उसे देखती थीं, जब सरिता वापस लौटती तो वह उसके बाल देखतीं, कपड़े देखती, चेहरा देखती···शायद अनुमान लगाती थीं कि सरिता जैसी गई थी वैसी ही आई है—कुछ कर तो नहीं आई—।

'आज देर क्यों हो गई···।' माँ ने पूछा।

'विनोद से बातों में देर लग गई।'

'सरिता ! मैं तुम्हारी माँ हूं···यह तुम जानती हो ?'

'जानती हूं लेकिन आपको यह प्रश्न करने की जरूरत क्यों पड़ी ?' सरिता ने तीखे स्वर में कहा।

'तुम जानती हो मुहल्ले में तुम्हारे संबंध में क्या-क्या अफवाहें उड़ रही हैं···और हर अफवाह के पीछे कम-से-कम एक प्रतिशत सच्चाई तो जरूर होती है···यह मेरा चालीस वर्ष का अनुभव है कि अकारण कुछ नहीं उड़ाया जाता।'

'क्या ?' अचानक सरिता के तेवर एका एक बदल गए।

उसकी आँखों से आग की लपटें झोंक रही थीं···माँ ने इससे पहले कभी उसमें इतना रोष झलकता नहीं देखा था···उसकी आंखों में लहू उभर आया था और वह लहू पेट्रोल की भांति जलकर लपट दे रहा था···पता नहीं क्यों माँ स्वयं सहम गई, कुछ देर बाद सरिता ने कड़वे स्वर में कहा—
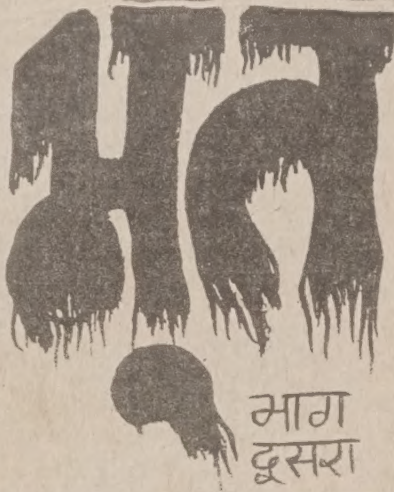
शेष पृष्ठ ३८ पर

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि सिलबिल-पिलपिल नया मकान लेते हैं तो वहां उनको पता लगता है कि मकान भुतहा है। इसके बाद उनको कई तरह के भुतहा भ्रम होते हैं। सिलबिल मोने अपने कमरे में जाता है तो वहां उसे एक नर कंकाल अट्टाहास करता मिलता है। वह कमरे से तुरन्त बाहर आता है लेकिन फिर हिम्मत करके अपने कमरे में घुसता है उसके आगे···

एक बात है भाइयों कि डर लग रिया हो तो उसका सबसे अच्छा इलाज यही है कि जोर से धमकी भरी आवाज में बोलो। बड़ी हिम्मत आ जाती है। आधा डर तो वैसे ही भाग जाता है। छाती चौड़ी हो जाती है। धमनियों में खून अपने दौड़ने की इस्पीड कम कर देता है जो बाल खड़े होते हैं वह बैठने लग जाते हैं। दिल की धड़कन सामान्य हो जाती है। देख लो इब मुझे कतई डर नहीं लग रहा है। अब चद्दर तान के मजे से सोऊंगा डर की अब कोई बात···
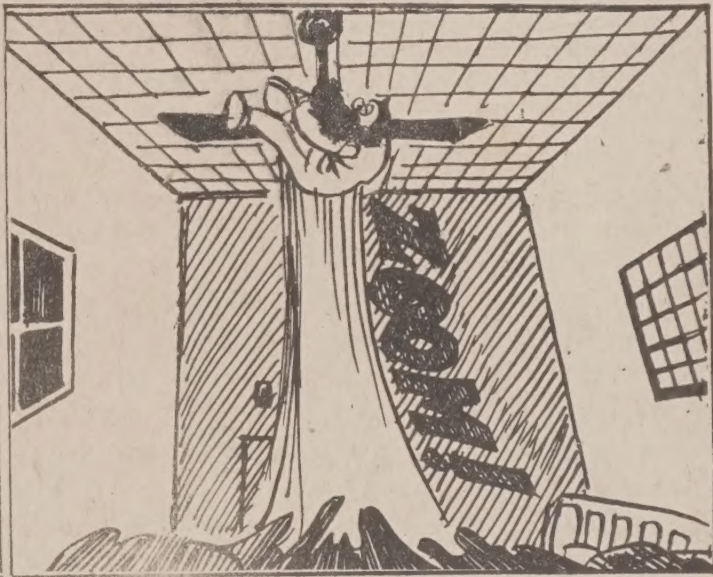
पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

चना कुरमुरा

● एक जीव वैज्ञानिक छुट्टियों में एक दूर स्थान पर गए । वहां कुछ शराती बच्चों ने एक चाल चली । उन्होंने एक तितली, एक कॉकरोच, एक टिड्डा और एक मकड़ा पकड़ा ! उन्हें मार मकड़े के शरीर में गोंद से तितली के पंख जोड़े । टिड्डे की टांगें जोड़ी और कॉकरोच का सिर लगाया। अब उसे लेकर वह वैज्ञानिक के पास गए और बोले, 'सर हमने जंगल में यह अजीब जीव पकड़ा है इसके बारे में आप कुछ बता सकते हैं ?'

वैज्ञानिक ने उसे देखा और मुस्कराए, 'बच्चों मैं तुम्हें यह ठीक बता सकता हूं किस वर्ष में इस जीव की उत्पत्ति हुयी ?'

बच्चों ने एक-दूसरे को देखा और कहा, 'बताइए' वैज्ञानिक ने बताया, '४०० B. C. में ।' (चारसौ बीसी)

● मैं बन जाता......।

...गायक—लेकिन घर वालों ने एक स्वर में इसका विरोध किया ।

...सेल्जमैन—अपनी आत्मा बेचना नहीं चाहता था क्योंकि इस काम में झूठ बोलना पड़ता है ।

...कवि—लेकिन इसमें मुझे कोई तुक नजर नहीं आया ।

...किसान—लेकिन इसका विचार उपजा ही नहीं ।

● एक राहगीर ने एक अन्य राहगीर के हाथ में घड़ी देखकर पूछा—जनाब, आपकी घड़ी में क्या समय हुआ है ?

राहगीर—ये घड़ी मेरी नहीं है ।

● एक—यार जब से रोजी तुम्हारी प्रेमिका बनी है तुम बिल्कुल बदल गये हो ।'

दूसरा—'हां यार, मेरी बीबी ने मेरी नाक, कान और जबड़ों का डिजायन बदल दिया है ।'

● एक वकील जिसका कोई वारिस नहीं था मरने लगा तो उसने वसीयत की कि उसकी जायदाद मूर्खों और पागलों मे बांट दी जाये । कारण पूछने पर उसने बताया 'ऐसे ही लोगों से मैंने कमाई की थी अब उनको कुछ मिलना भी चाहिये ।'

भारत के पक्षी एलबम सीरीज

पहाड़ी बटेर

(आर्फीमियां सुपसिलीयोसा)

पहाड़ी बटेर किसी समय में उत्तर भारत के पश्चिमी पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापक रूप से पाया जाता था । लेकिन अब समझा जाता है कि यह जाति भारत मे समाप्त ही हो चुकी है । सन् १८७६ के बाद इसके निवास स्थलों पर कई बार बड़े पैमाने पर इसकी खोज की गई परन्तु एक भी बटेर के दर्शन नहीं हुए ।

यह एक छोटे आकार का पक्षी था लगभग कबूतर के आकार का । इसकी पूछ लम्बी होती थी । आम रंग भूरे स्लेटी रंग का और चोंच तथा पैर लाल रंग के । ऐसा ख्याल है कि इसका मुख्य भोजन घास के बीज तथा कीड़े-मकौड़े हुआ करता था ।

पहाड़ी क्षेत्रों में जंगली जीव-जन्तुओं के विनाश का मुख्य कारण खाने के लिए अंधाधुंध शिकार किया जाना है । इसके अतिरिक्त जंगलों का कटाव और मनुष्य का अधिक से अधिक क्षेत्र में घुसपैंठ करना रहा है ।
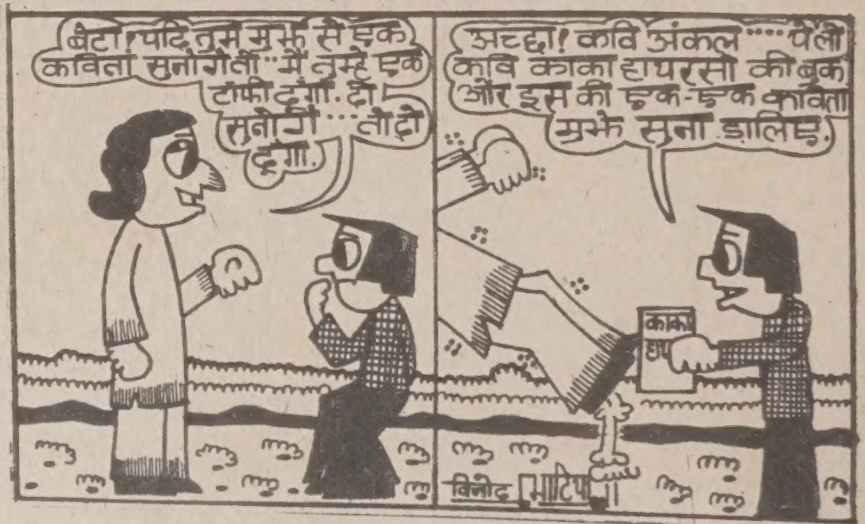
मोटू पतलू
पिछले दिनों घसीटाराम ने एक ऐसा ट्रांसमीटर बनाया था जिसे रेडियो के पास रखो तो वह रेडियो की आवाज बन्द करके घसीटाराम की आवाज सुनाने लगता था। इसके साथ ही घसीटाराम ने साईकोपैथि की कुछ किताबें पढ़कर अपनी विलपावर से दूसरों की किस्मत बदलने की कला सीखी थी, लीजिये अब इस कला का कलाकंद देखिये ।

मोटू पतलू फिल्म में काम करेंगे हेमा मालिनी और धर्मेन्द्र के साथ। दोनों को दो-दो लाख रुपया एडवांस मिलेगा। मैं भी देखता हूं कैसे मिलेगा। अपनी विलपावर से भट्टा बिठा दूंगा दोनों का।
सावन का महीना, पवन करे सोर
जियारा रे झूमे ऐसे जैसे बनवा नाचे मोर,
बन में क्या मैं इन्हें बीच चौराहे पर नचाऊंगा नंगा करके ।

सावन का महीना, पवन करे सोर
जियारा रे झूमे ऐसे जैसे बनवा नाचे मोर,
क्लिक, हम आकाश वाणी से बोल रहे हैं..
क्लिक
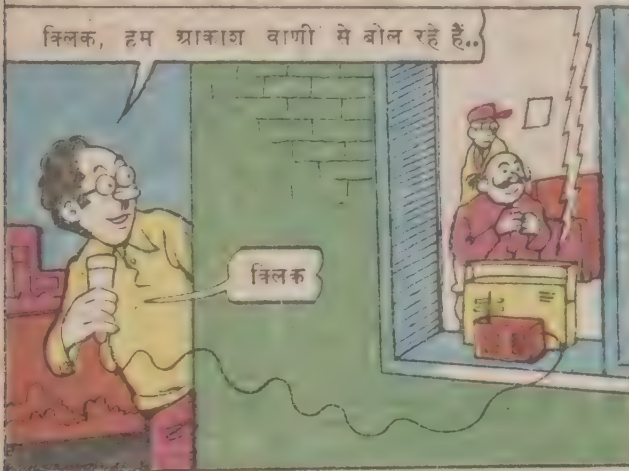
...हमें खेद है कि फिल्म मिलन का यह गाना आप पूरा न सुन सके। लीजिये अब आप सिंह और कन्या राशि वालों की किस्मत का हाल सुनिये। सिंह और कन्या राशि वालों की तकदीर फूटेगी।

सिंह राशि मेरी है
और कन्या मेरी है।
यह हो क्या गया है रेडियो वालों का हमारी ही राशियों का भविष्य बताने पर तुले हुए हैं।
कहीं से शोक समाचार मिलेगा। कोई करीबी रिश्तेदार भगवान को प्यारा हो जायेगा। कहीं से रुपया मिला तो खुद तो डूबेगा इन दोनों राशि वालों को भी ले डूबेगा।

सत्यानाश हो ऐसी भविष्यवाणी करने वालों का। जब देखो बस यही कहता रहता है हमारी लुटिया डूबेगी।
अवश्य डूबेगी। जब मैं विलपावर का जोर लगाऊंगा तो लुटिया का बाप भी डूबेगा।
भविष्य का हाल सुनाने के बाद अपना ट्रांसमीटर थैले में छुपाये घसीटाराम भी मोटू पतलू के घर में चला आ रहा था

कोई मर गया है तुम्हारा जो ऐसे रोनी सूरत बना रखी है ?
नहीं मरा है तो मर जायेगा, रेडियो ने तो यही भविष्यवाणी की है कि हमारा कोई करीबी रिश्तेदार भगवान को प्यारा हो जाएगा।
और तुमसे अधिक करीबी रिश्तेदार हमारा कोई है नहीं।
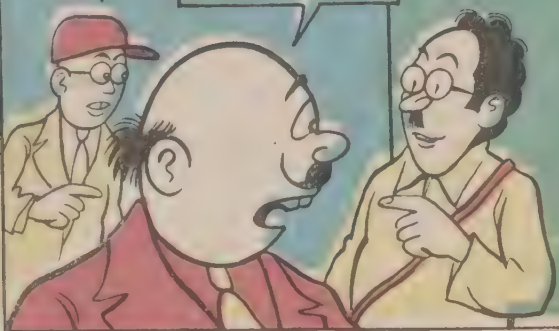
तुम्हारा मुर्दा उठाऊंगा मैं अपनी विलपावर से जैसा मैंने कहा है वह हंडरेड पर्सेंट सही होगा। चल मेरी साईकोपैथी, कोई बुरा समाचार ला इन फूटी किस्मत वालों के लिए।
बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाज आई।
आ गया इनकी मौत का वारंट।
खट
खट
खट
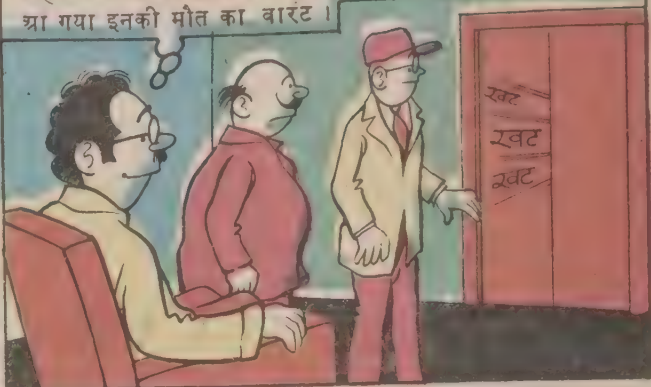
तार है। बिजली का तार है। ४४० वोल्ट का झटका मारेगा
अफ्रीका से आया है। लिखा है हमारे दूर के रिश्ते के फूफा जी सेठ गोविन्द राम का स्वर्गवास हो गया है।
हन्डरेड पर्सेंट सच निकली है मेरी बतायी भविष्यवाणी, आगे पढ़ो। अभी और खाट खड़ी होगी तुम्हारी।

आगे लिखा है हमारे प्यारे फूफा जी के कोई सन्तान नहीं है। इसलिए वे अफ्रीका में अपनी सारी जायदाद और हीरों की खान से हीरे निकालने वाली अपनी कम्पनी हमारे नाम कर गये हैं। फूफा जी के वकील ने लिखा है कि हम शीघ्र से शीघ्र अफ्रीका आयें और अपनी जायदाद सम्भाल लें।
कमाल हो गया। रेडियो कुछ कह रहा है और हो कुछ और रहा है। फूफा जी की विल ने हमें जमीन से आसमान पर पहुंचा दिया।
?
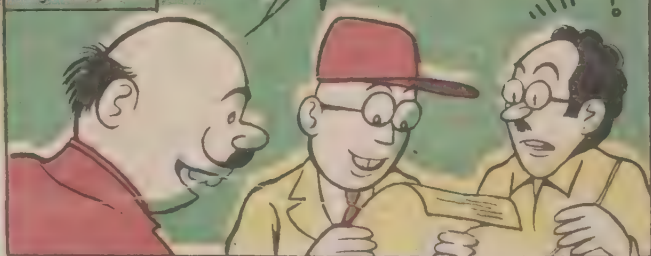
पर विलपावर ने तो मुझे धरती से नीचे पाताल में गाड़ दिया है। कोई बात नहीं। मेरी साईकोपैथी कभी तो रंग लायेगी। मैंने भी इन्हें नगाबड़ी के घाट ले जाकर न मारा तो मेरा भी नाम नहीं।
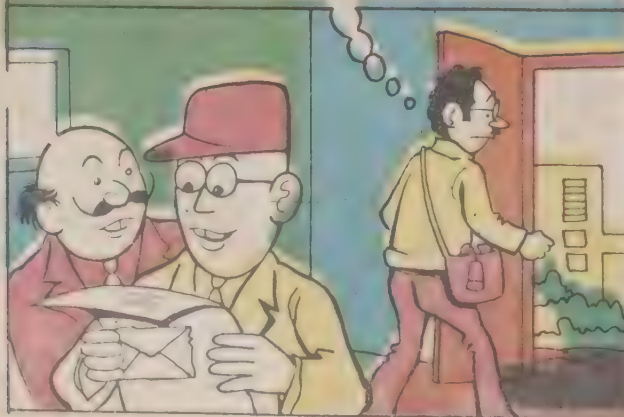
घसीटाराम मोटू पतलू के घरसेबाहर आया और उनके ट्रांसमीटर के पीछे अपना ट्रांसमीटर रख कर फिर हेरा-फेरी शुरू कर दी।
लीजिये, ताजा समाचारों से पहले सिंह और कन्या राशि वालों के भविष्य का हाल एक बार फिर सुनिये। इन दोनों राशि वालों के ऊपर गाड़ी चढ़ जाएगी।

सिंह और कन्या राशि वालों का बैण्ड बज जाएगा।

फिर गला फाड़ कर बकवास करने लगा। इस ट्रांजिस्टर पर मिट्टी का तेल डाल कर इसे माचिस दिखा दो।

सिंह और कन्या राशि वाले सिर से सिर टकरा कर रोयेंगे।

सर से सर ...ट...ट ...टकरा।

वाह री मेरी विलपावर। सर से सर तो टकराया। पर राशि का हिसाब तो लगा लिया होता। मैंने सिंह और कन्या राशि वालों के सिर फोड़ने को कहा था। तूने मकर राशि के सर का तबला बजा दिया। मोटू पतलू फिल्म स्टार बनने वाले हैं और मुझे यह स्टार नजर आ रहे हैं, कलर बाई-टैक्निकलर।

तभी एक गाड़ी आकर मोटू-पतलू के घर के आगे रुकी।
अशोका होटल चलिये. आपको धर्मेन्द्र और हेमा मालिनी ने बुलाया है।
बस हम चलने की तैयारी ही कर रहे थे। अच्छा हुआ उन्होंने गाडी भेज दी।
मैंने कहा था गाडी इन दोनों के ऊपर चढ़ेगी और हुआ यह है कि यह दोनों गाडी के ऊपर चढ़ गये हैं। समझ में नहीं आता विलपावर कहां बैठी भुट्टे भून रही है।

मुझे भी अशोका होटल ले चलो अपने साथ ।
आ जाओ, तुम भी क्या याद करोगे कि किन रईसों से पाला पड़ा है ।

फिलम में छाती पीट-पीट कर रोने का कोई सान नहीं हुआ तो उसके लिये घसीटा राम को गेस दिलवा देंगे ।

मोटू-पतलू अशोका होटल पहुंचे तो धर्मेन्द्र और हेमा मालनी उन का इन्तजार ही कर रहे थे ।

हैलो धर्मेन्द्र जी
नमस्ते हेमा ।
आइए, आइए, तशरीफ लाइए ।

इनसे मिलिए यह हैं फिलम 'दिल और दीवाना' के डायरेक्टर, प्रोडयूसर, बिनोद चोपड़ा ।

और यह हैं चोपड़ा जी की नई खोज रजनी गंधा ।

रजनी गधा का अधिकतम रोल तुम दोनों के साथ है। फिल्म की कहानी इस प्रकार है कि रजनी गधा एक बे-सहारा लड़की है चालबाज लोगों और सैक्स को एक्सप्लोएट करने वालों से परे रहने के लिए वह ऐसे सच्चे मित्र और इन्सानियत के पुजारी की तलाश में है, जिसके साथ रह कर वह अपने सौंदर्य को लुटने और बदनाम होने से बचा सके। एक
दिन एक रैस्टोरेंट में रजनी गधा की मुलाकात दो हसमुख आदमियों से होती है उनकी सादगी और साफदिलीउसे भा जाती है। और वह वकिंग गर्लज हासटल छोड़ कर उनके साथ रहने लगती है हस-मुख आदमियों का रोल तुम दोनों कर रहे हो मोटू और पतलू।

मेरे विचार में तुम्हारे साथ कामेडी के रोल में मोटू- पतलू को ले कर हम एक बहुत बड़ा कमाल कर रहे हैं।
इस में कोई शक नहीं यह कामिक के इतने मंजे हुए कलाकार हैं कि मेरे साथ जिस सीन में भी आयेंगे, मुझे अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।
तुम ठीक कहती हो!

यह आदमी कौन है ?
यह हमारा मित्र है घसीटा राम, शकल चाहे कैसी भी हो पर दिल बड़ा साफ है।
इतना साफ जैसे स्नो व्हाईट से अभी-अभी धुल कर आया हो।

विलेन से मार खाने या कहीं मुर्दे उठाने का सीन हो तो इसे भी रोल दे देना।
नहीं हमारी फिल्म में ऐसा कोई रोल नहीं।

इनके मजे आ गये, दोनों के नाम के डंके बज रहे हैं। दोनों लाखों में खेल रहे हैं, सुनहरा भविष्य इनके सामने है और अंधेरी रातों में रोने के लिये कहीं भी मेरा साथ नहीं देंगे। इसका मतलब यह हुआ कि साईकोपैंथी के हिसाब से जिस बात के लिए विलपावर का जोर
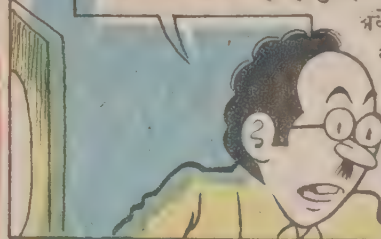
लगाया जाए वह उल्टी सिद्ध होनी है। मैंनेमोटू-पतलू के लिए बुराई सोची तो इनके साथ भलाई हुई।
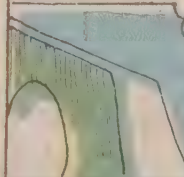
आईडिया...., हंडरेडमिलियन डालर का आईडिया! अब मोटू-पतलू के लिये भलाई सोचूंगा तब इनके साथ बुराई होगी।
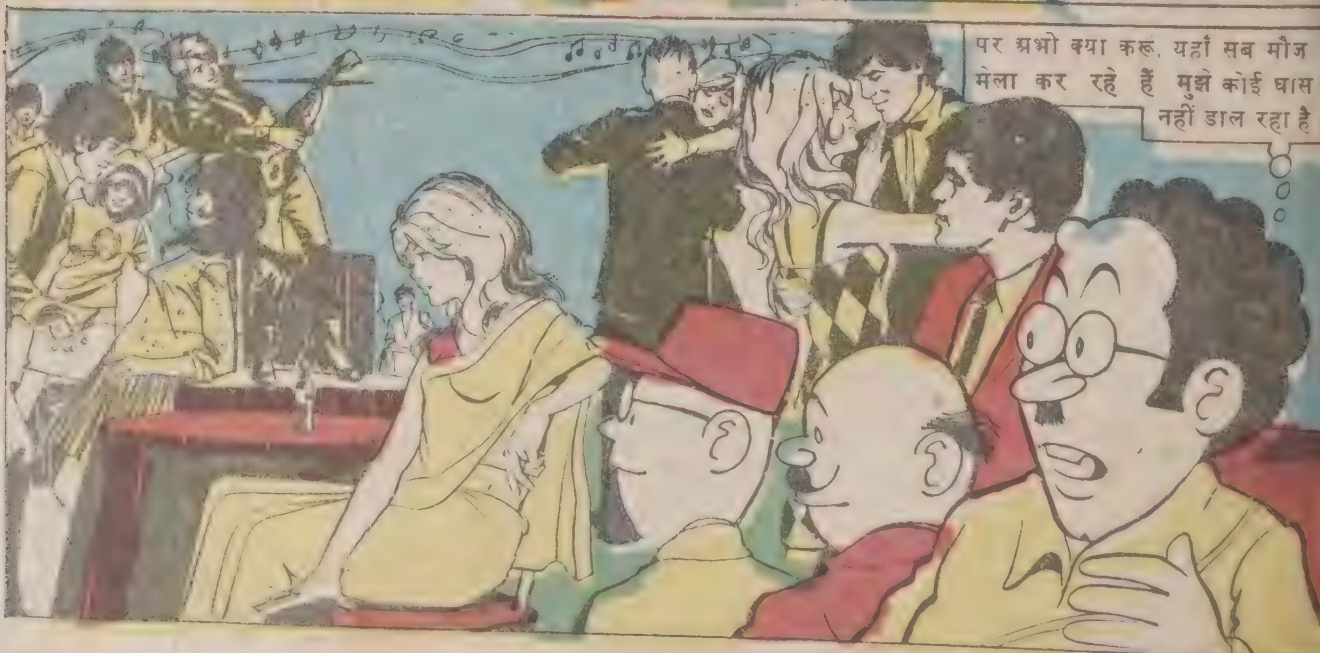
अपने घर चलूं,कल कोई तिकड़म भिड़ाऊंगा। इसका मतलब है पडित लोग राशी फल में जो भविष्य का हाल बताते हैं उलटा होता है।

घसीटा राम घर पहुंचे तो उसके सामने दीवाना का नया अंक पड़ा था। उसे खोल कर वह साप्ताहिक भविष्य का कालम पढ़ने लगा।
मेरी राशिफल में लिखा है, दूसरों का बुरा सोचोगे तो तुम्हारा बुरा होगा
दीवाना
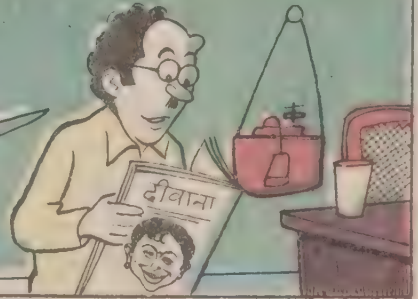
आने वाले समय खराब हैं। कहीं से कोई बुरा सन्देह प्राप्त होगा सर पर मुसीबतों का पहाड़ टूटेगा।

सर पर मुसीबतों का पहाड़ टूटेगा? बड़ी खुशी की बात है! राशि फल में जो कुछ लिखा हो उससे उलटा होना हैना।
खट खट
खट खट
कही से बुरा सन्देश मिलेगा! आ गया बुरा सन्देश।
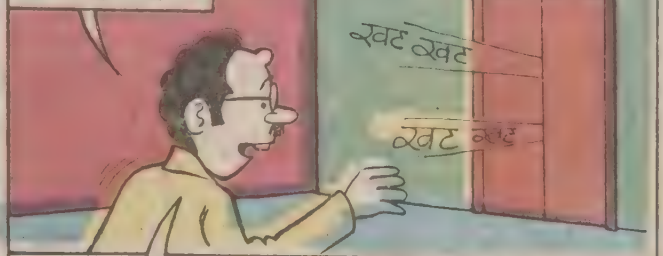
बुरे संदेश का लिफाफा दे गया डाकिया, इसके बाल बच्चे जीते रहें। जैसे मोटू-पतलू के साथ उलटी बात हुई मेरा भी कोई फूफा मरा होगा और मेरे लिये लाखों करोड़ों की जायजाद छोड़ गया ही होगा।

लिफाफा खोल और दुनिया में धमाका कर दे मुरली वाले घसीटा राम।

धड़ाम

लिफ़ाफ़े में किसी मनचले दीवाना के पाठक ने 'पत्र बम' भेजा था जैसे ही घसीटा राम ने लिफाफा फाड़ा, एक तेज धमाके के साथ पत्र बम फट गया।
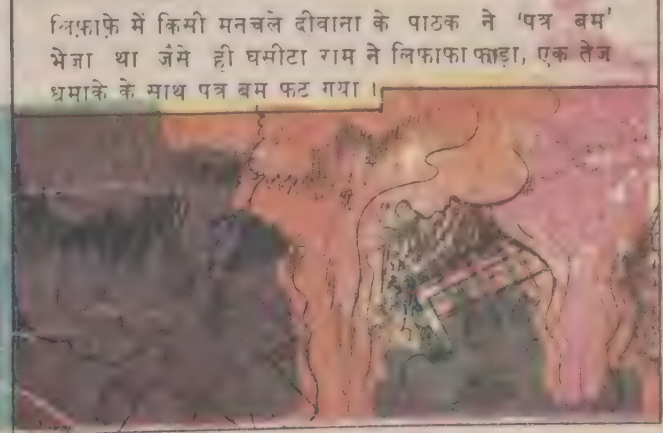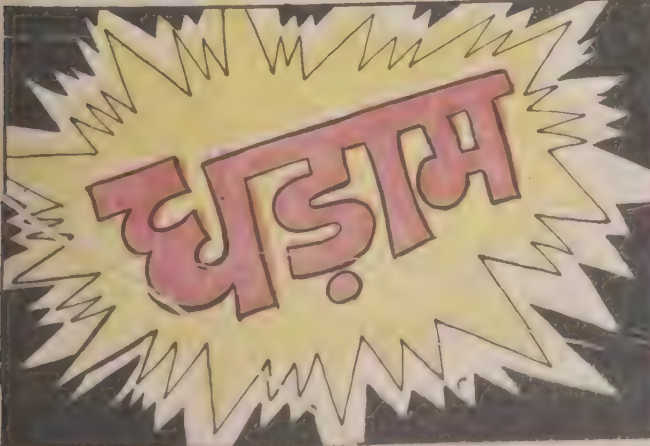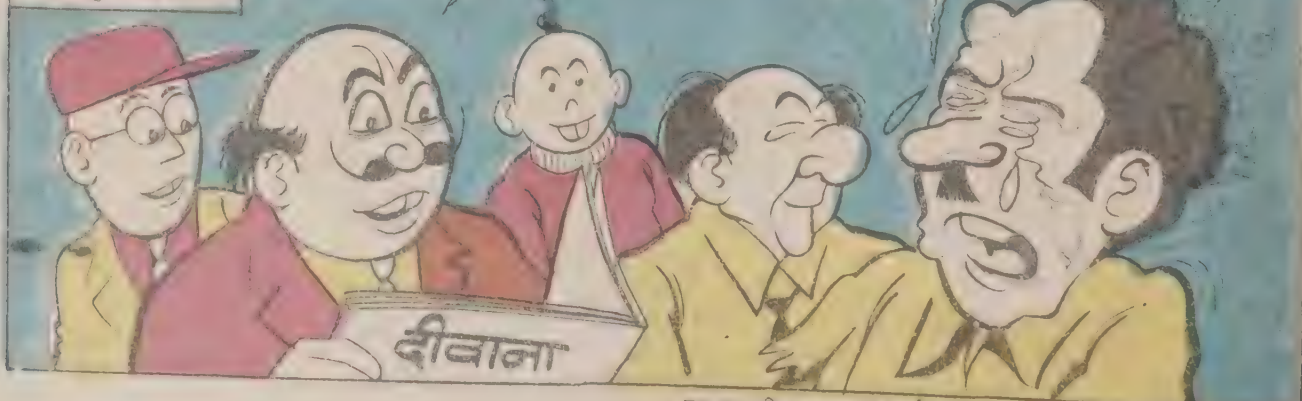
इन ग्रमली कलाकारों से दीवाना के आगामी अंक में फिर मिलिये ।

मास्को ओलम्पिक का मीशा अंतरिक्ष में

जैसे कि आपको पता ही होगा १६८० में मास्को में होने वाले ओलम्पिक का शुभ चिन्ह मीशा भालू है। अब तक ओलम्पिकों के शुभ प्रतीक चिन्ह कबूतर, कुत्ता व बीवर भी रहे हैं लेकिन मीशा अन्तरिक्ष यात्रा के मामले में सबसे बाजी मार गया है। इसकी रोचक कथा पढ़िये।

मीशा को अन्तरिक्ष में भजने का विचार सबसे पहले ओलम्पिक पैनोरमा के सम्पादकीय दफ्तर में पैदा हुआ। लेखकों ने निर्णय किया कि ओलम्पिक के शुभचिन्ह मीशा को अन्त-रिक्ष से धरती का नजारा दिखाया जाये ताकि वह देख ले कि धरती कितनी सुन्दर है और धरती को युद्ध और विनाश से बचाना कितना जरूरी है।

रास्ते में कई अड़चनें थी! कागजी कार्यवाइयां पूरी करनी थी। मी[illegible]-[illegible] यात्रियों के साथ यान में यात्रा करने की अनुमति प्राप्त करनी थी इसके लिये ग्राऊंड कंट्रोल को मीशा का वजन आकार व बनावट आदि के बारे में पूरी सूचना चाहिये थी जो कि हर अन्तरिक्ष यात्री पर लागू होती है।

चयन समिति को तीन उम्मीदवार दिखाये गए सबसे बड़ा भालू का बच्चा एक वर्ष के बालक के बराबर आकार का था और सबसे छोटा चूहे से थोड़ा सा बड़ा। बीच वाला मीशा चुनाव जीत गया। अब मीशा साहब के लिये स्पेस सूट सिलवाया गया रीडियर की खाल से!

अन्तरिक्ष उड़ान से कुछ सप्ताह पहले मीशा को बैकनूर अन्तरिक्ष यात्रा केन्द्र पर लाया गया जहां उसकी डाक्टरी जांच हुई। यात्रा के जरूरी कागजात आदि मीशा के सामान में बांध दिये गये। कागजात में मीसा का अन्तरिक्ष पास-पोर्ट तथा मीशा के बारे में व्यक्तिगत जानकारी तथा सरकारी प्रमाण पत्र थे। मीशा मास्को ओलम्पिक का चिन्ह भी साथ लेना गया।

फिर यात्रा का शुभ दिवस भी आ गया १५ जून १६७८! मीशा दूसरे अन्तरिक्ष यात्रियों कावल्यानोक तथा इवानचेंकोव के साथ स्पेस कैप्सूल में प्रविष्ट हुआ।

...तीन...दो...एक...और अन्तरिक्ष यान उठने लगा। मीशा को अन्तरिक्ष यान के भीतर मजा आ रहा था। अन्दर कैबिन में गुरुत्वाकर्षण शक्ति शून्य थी अतः वह हवा में कलाबाजियां खा रहा था जब वह ज्यादा ही शैतानी करने लगा तो उसे रस्सी से खूंटे से अटका दिया गया।

एक शाम मीशा को अपने अन्तरिक्ष कैबिन के बाहर अपरिचित आवाजें सुनाई पड़ी। दरवाजा खुला और दो व्यक्ति तैरते हुए अन्दर आये। मीशा के साथी अन्तरिक्ष यात्रियों ने उनका स्वागत किया वे आपस में गले मिले एक दूसरे की पीठ थपथपायी। मीशा को यह सब गोरख धन्धा समझ में नहीं आ रहा था। तभी आगन्तुकों में से एक ने मीशा को प्यार से पकड़ कर हवा में उछाल दिया। मीशा ने हवा में ट्विस्ट और चाचाचा के करतब दिखाये। आगन्तुकों के मुंह से निकल पड़ा, 'कितना प्यारा भालू है।'

दूसरे दिन धरती के निवासियों ने रेडियो पर समाचार सुना '२८ जून १६७८ को सोयूज ३० अंतरिक्ष यान सैल्यूत ६-सोयूज २६ अंतरिक्ष स्टेशन से जुड़ गया है।

स्टेशन पर मीशा जल्द ही नये कार्यक्रम का अभ्यस्त हो गया वह और अंतरिक्ष यात्रियों के संग ही उठता जब उसकी रस्सी खोल दी जाती तो हवा में कलाबाजियां खाता। मीशा को हैरानी होती कि वह भी अंतरिक्ष यात्रियों के समान ही हवा में तैरता है उसका वजन कैसे गुब्बारे जितना हल्का हो गया है। अंतरिक्षयात्री कावाल्योनोक पास से तैरता हुआ निकल गया। मीशा ने १८० डिग्री का कोण बनाते हुए मोड़ लिया। मिरोस्लोव उससे आ टकराया तो मीशा हवा में उल्टा हो गया। प्योटर ऊपर छत की तरफ मीशा को अपने साथ खींच लेना गया। ऐलैक्जेंडर ईवानचेंकोव ने अपना कंधा उससे रगड़ा ही था कि मीशा दीवार की तरफ फिसल चला।

मीशा कुछ न कुछ करता ही रहता। हर जगह अपनी टांग अड़ाता। एक दिन दीवार से उसकी नाक टकरा गयी और नाक चपटी हो गयी। एक सप्ताह बीता अंतरिक्ष यात्री लौटने की तैयारी करने लगे। मीशा भी अपना बोरिया बिस्तर बांधने लगा। अंतरिक्ष स्टेशन से धरती की ओर लौटने वाले पहले यान में मीशा को भी लौटना था। जिन दो अंतरिक्ष यात्रियों के साथ मीशा धरती से आया था उन्हें अंतरिक्ष स्टेशन पर टिकना था और जो अंतरिक्ष स्टेशन पर थे उनकी ड्यूटी समाप्त हो गयी थी और वह लौट रहे थे मीशा को उन्हीं के साथ आना था।

तभी एक और बात हुयी। कोवाल्योनोक तथा ईवान चैंकोव ने ग्राऊंड कंट्रोल से अनुमति मांगी कि उन्हें मीशा से बहुत लगाव हो गया है मीशा को फिलहाल अंतरिक्ष स्टेशन पर उन्हीं के साथ रहने दिया जाय। उनकी प्रार्थना ओलम्पिक समिति को भेजी गयी। प्रार्थना स्वीकृत हुयी।

अंतरिक्ष स्टेशन से नीचे देखने पर हरी पीली, नीली, चमकदार मोहक रंगों से पुती धरती घूमती हुयी रंगीन चित्रकारी सी लगती। मीशा खिड़की से यह सब देखता। उसे पहाड़, समुद्र, पठार, रेगिस्तान, जंगल, शहर और खेत वगैरह सब नजर आते। लेकिन इतनी दूर से मनुष्य नजर नहीं आते थे खैर कोई बात नहीं। मीशा १६८० में सबको देख लेगा जब दुनिया के कोने-कोने से लोग ओलम्पिक देखने या भाग लेने मास्को पहुंचेंगे।

स्वमूत्र

गोपाल चौरसिया

अखबार मालिक के डांटने पर—
एक भोले से,
कम्पोजीटर को आगे करके
व्यवस्थापक ने कहा—
सर,
'सूत्रधार' के स्थान पर
'मूत्रधार' इसने कम्पोज किया है।
क्योंकि, आजकल यह—
'स्वमूत्र' से प्रभावित हुआ है

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

हथेली को धारदार कैसे बनायें

हथेली की सबसे छोटी उंगली से कलाई से थोड़ा ऊपर वाले किनारे को मजबूत बनाने के लिए एक कमर जितनी ऊंची मेज लें। उस पर पत्थर की एक चौड़ी पट्टी (पट्टी हथेली की लम्बाई-चौड़ाई से कुछ ज्यादा बड़ी होनी चाहिए)—रखें। उस पत्थर की पट्टी पर कोई बोरी या कम्बल का टुकड़ा बिछा दें अथवा घास या पुआल की परत बिछा दें ताकि पत्थर की कठोरता हथेली को महसूस न हो लेकिन आधार अवश्य कठोर हो। इतना करने के बाद दोनों हाथों की हथेलियां सीधी कर एक-दूसरे से मिला लें। हथेली की मुद्रा ऐसी हो जैसी किसी को नमस्ते के समय हथेली की उंगलियां सीधी कर लेते हैं। या कि बच्चे को चांटा मारते समय हथेली फैला लेते हैं। दोनों हाथों की छोटी उंगली की तरफ वाला किनारा पत्थर पट्टी पर धीरे-धीरे मारिए। पहले धीरे-धीरे हथेलियां पत्थर की पट्टी पर बारी-बारी से मारिए फिर धीरे-धीरे हाथों को जोर-जोर से मारिए हाथ को इतने जोर से पटकिए कि आपको दर्द का अनुभव न हो। ऐसा पहले १५-२० बार प्रतिदिन कीजिए। फिर धीरे-धीरे संख्या भी बढ़ाते जाइए साथ ही प्रहार भी जोर-जोर से कीजिए। डेढ़-दो माह में ही आपकी हथेली के किनारे की खाल कठोर व मजबूत हो जाएगी।

इसी तरह के प्रहार मुट्ठी बांधकर भी करें ताकि हथेली की गद्दी का किनारा भी मजबूत हो जाए।

इसी प्रकार के प्रहार चारों उंगलियों के सिरों की और भी करना चाहिए। इसके लिये पहले उंगलियों को सिकोड़ कर उनका छोटा-बड़ापन दूर कर उन्हें बराबर कर लें। फिर उनके सिरों को पत्थर की पट्टी पर धीरे-धीरे मारें और ऊपर बताये गए अभ्यास की तरह इसका भी अभ्यास नियमित करें। इससे आपकी उंगलियों के सिरे मजबूत हो जायेंगे।

इस प्रकार का अभ्यास कोहनी को मजबूत करने के लिए करें (कलाई से लेकर कोहनी के जोड़ से पहले का भाग)। इससे आपकी कोहनियां कठोर व मजबूत हो जायेंगी। निरंतर अभ्यास करने से कोहनी का यह भाग इतना मजबूत हो जाता है कि शत्रु की लाठी या किसी अन्य वस्तु का प्रहार आप आसानी से कोहनी पर रोक सकते हैं। आपको अधिक पीड़ा का अनुभव नहीं होगा। कारण, कोहनी की ऊपर की खाल इतनी कठोर हो जाती है कि पीड़ा का अहसास नहीं हो पाता।

हथेली की गद्दी को भी इसी अभ्यास द्वारा कठोर बनाया जा सकता है।
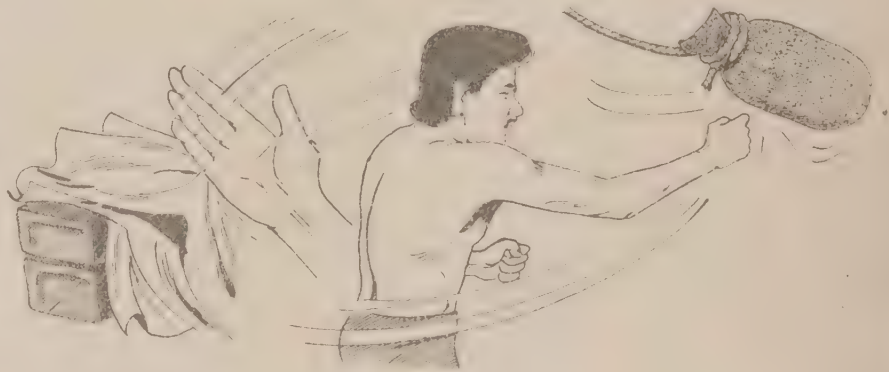
हाथ के इन भागों को मजबूत बनाने के लिए रोजाना १५-२० मिनट तक यह अभ्यास दोहरायें। दो-तीन महीने में ही आपका हाथ स्वयं हथियार बन जायेगा।

घूंसा या मुक्के का अभ्यास

आपका घूंसा या मुक्का भी शक्तिशाली बन जाये, इसके लिए एक मजबूत कपड़े की थैली लीजिए और उसमें रेत भर दीजिए। फिर एक मजबूत रस्सी के सहारे उसे लटका दीजिए। थैली आपकी छाती तक ऊंची लटकी होनी चाहिए। उंगलियों को मोड़कर मुट्ठी बांध लीजिए और दोनों के मुक्कों से इस थैली पर प्रहार कीजिए। लगभग २०-२५ बार रोजाना अभ्यास कीजिए। थैली पर घूंसा आप जितनी तेजी से मारें—उतनी ही तेजी से हाथ को पीछे खींचने का अभ्यास भी कीजिए। धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाते जाइए।

इस अभ्यास से आपकी उंगलियों के पीछे के भाग की खाल मजबूत व सख्त हो जाएगी। इसी थैली पर आप पैर का अभ्यास भी कर सकते हैं। इसके लिए थैली को ऊंचा-नीचा करके व्यवस्थित कर लें।

इसी थैली को मुंह या गर्दन की ऊंचाई तक करके पैर की ठोकर का निशाना भी पक्का कर सकते हैं। ताकि मौका आने पर आपके पैर की ठोकर शत्रु के चेहरे पर ठीक स्थान पर लगे।

निशाना पक्का करने के लिए आप थैली की तरह कोई गेंद भी लटका सकते हैं और उस पर अभ्यास कर सकते हैं। छोटी गेंद पर अभ्यास करने से एक लाभ यह होगा कि आपका निशाना और भी पक्का हो जाएगा। क्योंकि यदि आप इस छोटी गेंद पर अपना सही निशाना लगाना सीख जाते हैं तो फिर किसी भी बड़ी वस्तु यानी शत्रु के चेहरे पर आसानी से ठीक स्थान पर प्रहार कर सकेंगे। रोज के अभ्यास से आपको टांगें चौड़ी करने में कोई दिक्कत नहीं होगी और आप अभ्यस्त हो जायेंगे।

याद रखिए कैराटे के अभ्यास से आप को तीन तरह के फायदे एक साथ हो जाते हैं। पहला, आपके हाथ-पैर कठोर और मजबूत हो जाते हैं जिनके प्रहार से दुश्मन आपके सामने ठहर नहीं सकते। दूसरे ये अभ्यास ऐसे हैं कि आप की मांस-पेशियों को बल मिलता है और शरीर में फुर्तीलेपन का संचार होता है। तीसरे दुश्मन पर प्रहार करने के लिए आपका निशाना सही जगह पर बैठता है।

इसके अलावा कैराटे के दांव-पेंच तो अपनी अलग विशेषता रखते ही हैं।

प्र० : नींद हमें कैसे आती है तथा नींद की शरीर पर क्या प्रतिक्रिया होती है ?

सुरेश खुराना, 'पप्पी', —जीन्द

उ० : नींद से हमारे शरीर में क्या परिवर्तन आता है ये सबको ही विदित है। नींद हमारे शरीर तथा दिमाग की नष्ट हुई शक्ति को पुनः बनाकर शरीर तथा दिमाग को तरोताजा कर देती है। शरीर के थके हुए अंगों तथा टिशुओं के लिए नींद अति आवश्यक है। फिर भी आश्चर्य की बात ये है कि विज्ञान अभी तक ये पूर्णतया स्पष्ट नहीं कर पाया है कि नींद कैसे आती है। ऐसा अनुमान है कि मस्तिष्क की गहराई के भीतर एक बहुत पेचीदा क्षेत्र है, जिसे निन्द्रा केन्द्र कहते हैं। इस केन्द्र का नियन्त्रण रक्त द्वारा किया जाता है। दिन भर काम के दौरान शरीर की नसें तथा मांस पेशियाँ रक्त में केलशियम भेजती हैं. ये रक्त में मिला केलशियम अन्त में निद्रा क्षेत्र को कार्य करने के लिए प्रेरित कर देता है तथा इससे हमें नींद आ जाती है। इसका पता लगाया जा चुका है कि यदि किसी पशु के निद्रा केन्द्र में केलशियम का इंजेक्शन लगा दिया जाये तो वो तुरन्त सो जाता है, परन्तु रक्त शिरा में केलशियम का इंजेक्शन देने से नींद नही आती, इसका अर्थ हुआ कि निद्रा क्षेत्र को पहले काम करने के दौरान उत्पन्न हुए कुछ रसायनों से सुग्रहित होना आवश्यक है तभी ये केलशियम के मस्तिष्क में पहुंचने पर निद्रा का कार्य आरम्भ कर हमें सुला देते हैं।

सुलाने के कार्य में निद्रा दो प्रमुख कार्य करती है। सबसे पहले ये हमारे मस्तिष्क का कार्य रोक देती है। जिससे हमारी चेतना तथा इच्छा लुप्त हो जाती है ये दिमागी निद्रा होती है. ये मस्तिष्क से शरीर के भीतरी अंगों को जाने वाली नसों को रोक देती है जिसके कारण शरीर के भीतरी भाग तथा अंग निद्रा मग्न हो जाते हैं। इसे शारीरिक निद्रा कहते हैं। नींद आने पर शरीर में ये दोनों ही प्रतिक्रियायें हो चुकी होती हैं। हालांकि ये दोनों प्रतिक्रियायें अलग-अलग भी हो सकती हैं अर्थात शरीर के कार्यरत रहते हुए भी दिमाग सो जाता है जैसे कि एक बहुत थका हुआ सिपाही टांगों से मार्च करता रहता है परन्तु ये भी सम्भव है कि इस समय उसका दिमाग सो रहा हो। नींद में चलने वाले भी ऐसा ही करते हैं यानी दिमाग के सोने की हालत में भी शरीर से चलते हैं।

नींद कई प्रकार की होती है। गहरी नींद, हलकी नींद से अधिक आरामदेह होती है। इसी कारण देखा गया है थोड़ी देर की नींद की झपकी से मनुष्य अधिक चुस्त हो जाता है क्योंकि ऐसी झपकी अक्सर गहरी नींद की होती है।

प्र० : जिराफ की गर्दन इतनी लम्बी क्यों होती है ?

उ० : जिराफ पूर्वकाल से ही मनुष्य के लिये जिज्ञासा का विषय बना हुआ है। प्राचीन मिस्री तथा ग्रीक लोगों के अनुसार जिराफ चीते तथा ऊंट के मेल से उत्पन्न पशु हैं इसीलिए ये लोग इसे 'केमलेपर्ड' कहते थे।

संसार में पाये जाने वाले पशुओं में जिराफ, सबसे लम्बा पशु है। परन्तु वैज्ञानिक जिराफ की लम्बी गर्दन का भेद सुलझाने में अभी तक असमर्थ हैं। फ्रांस के एक प्रसिद्ध जीव विशेषज्ञ जीन बेपटीस्ट डी-लामार्क के अनुसार जिराफ की गर्दन भी अब से बहुत पहले काफी छोटी थी उनके विचार पशु की गर्दन की अद्भुत लम्बाई पेड़ों ऊपरी भाग की कोमल पत्तियां खाने के कारण बढ़ गई है। परन्तु अधिकतर वैज्ञानिक इस सिद्धान्त से सहमत नहीं हैं। इसमें शक नहीं कि जिराफ का शरीर एक सामान्य घोड़े के शरीर से बड़ा नहीं होता। इसकी ऊंचाई जो १८ फुट तक पहुंच जाती है इसकी लम्बी टांगों तथा गर्दन पर ही निर्भर है। जिराफ की गर्दन में मनुष्य की गर्दन के समान ही केवल सात ही 'वरटिबरा' हड्डियां होती हैं परन्तु जिराफ की गर्दन की हर हड्डी बहुत लम्बी होती है इसी कारण जिराफ की गर्दन हर समय अकड़ी रहती है, यहां तक की जमीन से पानी पीने के लिए इसे अपनी अगली टांगों को चौड़ा कर झुकना पड़ता है। इसकी गर्दन की अद्भुत बनावट इसके भोजन उपलब्ध करने के बिल्कुल उपयुक्त है। जिराफ एक शाकाहारी पशु है और घास के अभाव में पेड़ों की ऊंची टहनियों से पत्तियां खाकर अपना पेट भरता है।

जिराफ की जीभ लगभग डेढ़ फुट लम्बी होती है, इसकी सहायता से ये कांटों भरे पेड़ों से भी बड़ी सफाई से पत्तियां तोड़ने में सफल हो जाता है। शत्रुओं से अपनी रक्षा ये कई प्रकार से करता है। पहले तो इसका चितकबरा शरीर पेड़ों की धूप छाया में इसके छुपने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त इसके कान भी बहुत विकसित होते हैं जो हल्की से हल्की ध्वनि को आसानी से सुन लेते हैं. इसकी आंखें और सूंघने की शक्ति भी काफी तेज होती है। पीछा करने पर जिराफ अपनी लम्बी टांगों की सहायता से ३० मील प्रति घण्टे की रफ्तार से भाग लेता है तथा अच्छे से अच्छे घोड़े को पीछे छोड़ देता है।

हमला करने पर भी ये शत्रु का डटकर सामना करता है यहां तक की शेर भी इस पर हमला बड़ी सावधानी से केवल पीछे से ही करता है। ●

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

५ रुपये जीतिये

कमाल पाशा

स्वतंत्र तुर्किस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री कमाल पाशा बने। उन्हें ग्राधुनिक तुर्किस्तान का निर्माता समझा जाता है। जब तुर्किस्तान को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई तो वहाँ का सरकारी काम काज अंग्रेजी में होता था। कमालपाशा चाहते थे कि तुर्की भाषा में ही सरकारी कामकाज हो।

उन्होंने सरकार के उच्चतम ग्रधिकारियों को बुलाया और पूछा, 'अंग्रेजी के स्थान पर सरकारी कामकाज में तुर्की भाषा के प्रयोग में कितना समय लगेगा ?'

ग्रधिकारियों ने एक स्वर में कहा, 'सर, तुर्की को अंग्रेजी का स्थान लेने में कम से कम तीस साल लगेंगे।'

कमाल पाशा बोले, 'मित्रों, समझ लो कि ग्राज तीस साल पूरे हो गये। कल से सरकारी कामकाज तुर्की भाषा में होगा।'

ग्रौर दूसरे ही दिन से सरकारी कामकाज में तुर्की भाषा का प्रयोग होने लगा।

सारांश————

ग्रन्तिम तिथि— ९-८-७९

पता: दीवाना साप्ताहिक, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

धी
की न
इसमें
जायेंगे
इस
बुन करने के

ग्राजकल

राजेन्द्र 'चंचल' श्यामपुरी

सभ्यता ग्राजकल
चकले पर
डांस कर रही है,
संस्कृति पाश्चात्य से
रोमांस कर रही है,
ईमानदारी को
कैंसर हो गया है,
इन्सानियत के दाम
गिर गये हैं,
प्रीत केरोसीन की तरह
कहीं खो गयी है,
ग्रौर सच्चाई—
हिन्दी फिल्म की
नग्न हीरोइन—
हो गई है।

हो हो हो

● दो ग्रजनबी ट्रेन में एक साथ सफर कर रहे थे। बात ग्रौरतों पर चली तो एक ने कहा, मनुष्य को चाहिये कि ग्रपने सुख हमेशा ग्रपनी पत्नी से बाँटे। यही सुखी जीवन का राज है। जैसे ग्रादमी जुए में जीते या बोनस पाये तो पहला काम बीबी के लिए साड़ी खरीदने का करे! ग्रौरतों के लिये साड़ी जैसी कोई ग्रौर चीज नहीं है।'

दूसरे ने पूछा, क्या ग्राप मनोवैज्ञानिक हैं ?' पहला, 'नहीं। मेरी ग्रपनी साड़ियों की दुकान है! यह मेरी दुकान का एंडरेस।' उसने कार्ड पकड़ा दिया।

● कमला रोते हुए बोली, 'कल रात हमारा झगड़ा हुग्रा ग्रौर वह चले गये! ग्रब वह लौटकर नहीं ग्रायेंगे।'

बिमला, 'ग्ररी पगली पति-पत्नी में झगड़ा होता ही रहता है रोती क्यों है ? वह जल्दी ही लौट ग्रायेंगे।'

कमला सुबकते हुए, 'नहीं ग्रब वह नहीं लौटेंगे। जाते हुए वे ग्रपनी ताश की गड्डी भी ले गये।'

● ग्राहक, वेटर से; 'वेटर इस सब्जी में मक्खी है।' वेटर, 'फिकर मत कीजिये चावलों में छिपकली है।'

आने वाले चित्र

रोमेश शर्मा
व शशि कपूर फिल्म 'काला पत्थर' मे

अमिताभ व शत्रुघ्न सिन्हा
फिल्म 'काला पत्थर' में

हेमा मालिनी
फिल्म 'रज़िया सुल्तान' में

देवानन्द व टीना मुनीम फिल्म 'मन पसन्द' मे

विनोद खन्ना व परवीन बाबी फिल्म 'द बर्निंग ट्रेन' मे

पृष्ठ ९ से आगे

वहां जाकर वह बोला—'यहां मैं अपने बूढ़े पिता के साथ रहता हूं। जो रूखा-सूखा भोजन हम खाते हैं वह आप भी खायें, और फिर विश्राम करें।'

'परन्तु मेरे घोड़े का क्या होगा?' अमीर ने घबराते हुए पूछा।

'सुबह होने से पहले ही मैं आपके घोड़े को भी ढूंढ लाऊंगा।' वह व्यक्ति बोला।

'कैसे?'

'मैं इस जंगल के कोने-कोने से परिचित हूं।'

'तो क्या तुम मेरे साथियों को भी ढूंढ सकोगे?'

'यदि वे इस जंगल में हुए तो मैं उन्हें अवश्य ढूंढ निकालूंगा।'

इस उत्तर से सिन्धी अमीर को बहुत संतोष हुआ। अब वह निश्चिन्त होकर लेट

—प्यारे लाल

गया। अभी वह सोया नहीं था कि उस व्यक्ति ने अमीर के सामने दूध का कटोरा लाकर रख दिया।

'यह क्या है, महाशय?' अमीर ने पूछा।

उत्तर मिला, 'हमारी बकरी का दूध।'

'तुम्हारे पास कितनी बकरियां हैं?'

केवल एक।'

'क्या एक बकरी इतना अधिक दूध दे सकती है?'

'यह एक सेर से अधिक नहीं होगा।'

'तुम भी पियो।'

'पिताजी ने कहा है कि आज का दूध केवल अतिथि-सेवा में ही लगाया जा सकता है। आज हम लोग दूध नहीं पियेंगे।'

'क्यों?'

'हमारे यहां सबसे बढ़िया चीज दूध और पूत को समझा जाता है। अतिथि की सेवा में हम लोग इन दोनों वस्तुओं को पेश कर देते हैं। मैं पिताजी का इकलौता पुत्र हूं, और दूध हमारे यहां सर्वोत्तम भोजन समझा जाता है। पिताजी ने ये दोनों वस्तुएं आपकी सेवा में भेज दी हैं।'

'तुम सचमुच देवता हो।'

'नहीं साहब! देवता तो बहुत दूर की चीज है, हम तो पूरी तरह मानवता को भी नहीं अपना सके।'

'नहीं भैया! मानवता तो आप लोगों में कूट-कूट कर भरी हुई है।'

इस तरह बातें करते-करते सिन्धी अमीर सो गया।

अपने अतिथि की सच्ची सेवा करने वाला वह व्यक्ति चुपके से उठा और हाथ में मशाल लेकर अपने अतिथि का घोड़ा ढूंढने के लिए चल दिया।

पौ फटने के समय के आस-पास वह अपने अतिथि का घोड़ा लेकर अपनी झोंपड़ी पर लौटा। उसकी माता ने जब देखा कि अतिथि का घोड़ा मिल गया है तो वह उठ कर घोड़े के लिए दाना दलने लगी। वह जानती थी कि घोड़ा जंगल में घास चरकर आया होगा परन्तु फिर भी उसने अतिथि के घोड़े की सेवा करना अपना कर्तव्य समझा।

घोड़े को यदि दाना न मिलता तो शायद अतिथि-सेवा अधूरी समझी जाती।

प्रातःकाल जब सिन्धी अमीर सोकर उठा तो उसने देखा कि उसका घोड़ा दाना खा रहा था और अतिथि सेवक किसान उसके सामने हाथ जोड़े हुए कह रहा था—'आज ईश्वर ने हमारी लाज रख ली।'

'कैसे?' अमीर ने पूछा।

'आपका घोड़ा सकुशल मिल गया। यदि वह सामने की ओर निकल गया होता तो शायद बाघ उसे अपना शिकार बना लेता।'

यह सुनकर अमीर ने उस व्यक्ति को बड़ा धन्यवाद दिया। इसी समय उस व्यक्ति की वृद्ध माता ने अतिथि के लिए दूध का कटोरा भरकर भेज दिया।

दूध पी लेने के बाद अमीर ने घर लौटने की इच्छा प्रकट करते हुए कहा—'मैं तुम्हारे पिताजी से मिलना चाहता हूं।'

नवयुवक अपने पिता को बुलाने गया और कहने लगा—'पिता जी, अतिथि महाशय आपको याद कर रहे हैं।'

'किस लिए?' पिता ने पूछा।

'वे जाना चाहते हैं।'

'उनसे कहो कुछ दिन और ठहरें।'

'मैंने कहा था परन्तु वे मानते नहीं।'

'अच्छा तो उन्हें सक्खर शहर तक छोड़ आओ।'

शेष पृष्ठ ३६ पर

बन्द करो बकवास

क्या हुआ तेरा वादा वो कसम वो इरादा।
बन्द करो .बकवास. मैं सिगरेट पीना नहीं छोड़ सकता। पर तुम मेरा पीछा करना छोड़ोगी कि नहीं।

किसी पे दिल अगर आ जाए तो क्या होता है
बन्द करो बकवास.हम तुम्हें थाने ले चलते हैं और वहां बताते हैं कि क्या होता है ?

ओ साथी रे तेरे बिना भी क्या जीना।
NE MART
बन्द करो बकवास और अपना नाटक, जो पीना है कल पी लेना. आज दकान बन्द है।

पृष्ठ ३४ से आगे

'जाने से पहले वे आपके दर्शन करना चाहते हैं।'

'बेटा! अच्छा तो यही होगा कि मैं उनसे न मिलूं।'

पिता की यह बात सुनकर पुत्र को कुछ आश्चर्य हुआ। उसने अपने पिता के सामने मुख से कभी 'क्यों' का शब्द नहीं बोला था। अतः वह पिता को इस प्रकार देखने लगा मानो उसकी आंखों में 'क्यों' का शब्द लिखा हो। वृद्ध पिता ने पुत्र के इस प्रश्न को पढ़ लिया और उसे धीरे से समझाते हुए बोला—'तुम शायद यही पूछना चाहते हो कि मैं अतिथि से इस प्रकार दूर रहकर उसका निरादर क्यों कर रहा हूं। असल में मेरी इस बात में भी अतिथि-सत्कार का भाव भरा हुआ है।'

'मैं इस अनादर में आदर की भावना को समझ नहीं सका, पिताजी!'

'समझाऊं भी कैसे?'

'ऐसी कौन-सी कठिन बात है जो मुझे न समझा सकें।'

'यूं ही एक व्यर्थ-सी घटना है जिसे मैं बताना नहीं चाहता।'

'अच्छा तो मैं अतिथि महोदय से आपके बारे में क्या कहूं?'

'यही कि पिताजी बूढ़े भी हैं और रोगी भी। वे चल-फिर नहीं सकते। अतः उनका बाहर आना कठिन है।'

पुत्र ने अपने पिता का सन्देश सिन्धी अमीर तक पहुंचा दिया। यह बात सुनकर अमीर बोला—'इस पवित्र स्थान पर आकर मैं ऐसे महात्मा को देखे बिना कैसे जाऊं जिसके घर में भूले-भटकों को मार्ग दिखाया जाता है, जहां अतिथि की सेवा जी-जान से की जाती है, जहां अपरिचित अतिथि के घोड़े को ढूंढने के लिए घरवाले अपनी जान संकट में डाल सकते हैं, और जहां गृहिणी अपना खान-पान उठाकर अतिथि के घोड़े का पेट भरने के लिए तैयार रहती है। तुम्हारे पिता को देखकर ही मेरा जीवन सफल हो सकता है।'

पुत्र ने अतिथि का सन्देश पिता से कह सुनाया। अब वृद्ध क्या करता। उसे अतिथि के सामने आना ही पड़ा।

सिन्धी अमीर ने जब उसे देखा तो उसी समय पहचान गया कि यह तो वही बूढ़ा है जो कुछ दिन हुए सक्खर में उसके महलों के सामने बोझ उठाये हुए आया था। एक रात के लिए वह आश्रय मांगता था। अमीर ने उसे चोर तक कह दिया था। कितनी दानवता थी उस दुर्व्यवहार में! इस वृद्ध के पुत्र ने अपनी मानवता का परिचय देकर सिंधी अमीर के हृदय को बिल्कुल ही बदल दिया। सिंधी अमीर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमायाचना करने लगा।

वृद्ध ने कहा—'आपकी ओर से क्षमा-याचना का प्रश्न पैदा ही नहीं होता क्योंकि मैं बाहर आकर आपको उस पुरानी घटना की याद दिलाना नहीं चाहता था। आपके आग्रह को मैं टाल भी नहीं सका। इसीलिए मुझे यहां आना पड़ा। इससे शायद आपको दुःख हुआ हो। अतः मुझे आपसे क्षमा मांगनी चाहिए।'

'कितना ऊंचा है आपका व्यक्तित्व!' यह कहकर सिंधी अमीर वृद्ध के चरणों में गिर पड़ा। उसके नेत्रों से पश्चात्ताप के आंसू गिर रहे थे। उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे, मानो वह यही कह रहा हो—'इस बूढ़े की झोंपड़ी महलों से बहुत ऊंची है क्योंकि यहां मानवता का निवास है।' ●

दृढ़ निश्चयी

वे,
अपने लक्ष्य को छूने में,
इतने दृढ़ निश्चयी दिखे,
कि मात्र कुर्सी उनके हाथ रहे,
बस इसके लिए वे,
सब सिद्धान्तों को तिलांजलि दे,
एक साल में कई बार,
बेभाव चौराहे पर बिके॥ ●

—आज़ाद रामपुरी

दो हंसाइयां

● अपने प्रेमी को
समझाते हुए
वो बोली—
तुम बन जाओ नेता
और मुझे समझ लो
कुर्सी!

● पत्नी उदास है
पति रोता है
वो बोले—
पाणिग्रहण के बाद
यही होता है!'

हाश

रिणाम
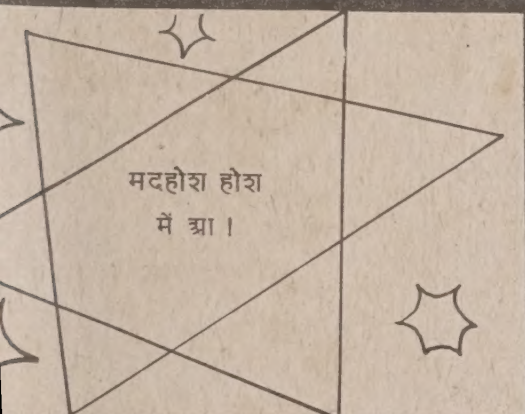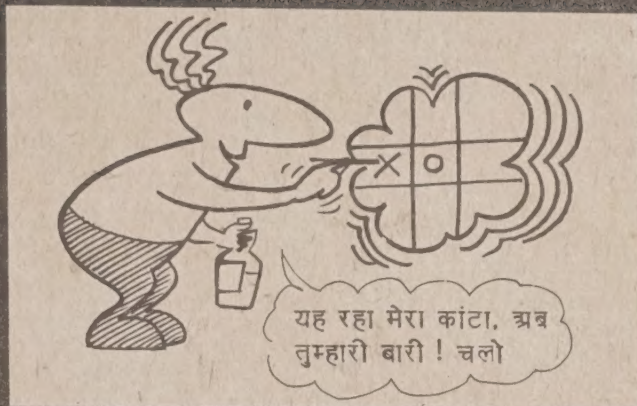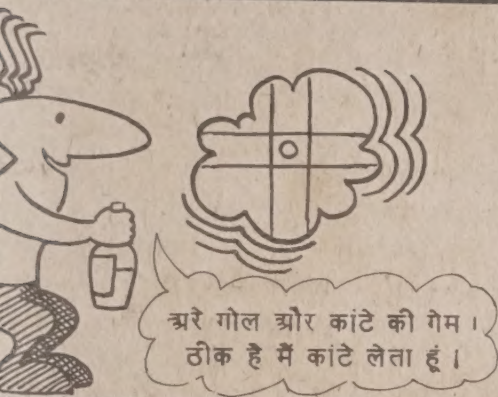
१२ में प्रकाशित
हेली का हल

त	ला	ह	ट
		म	स
क	स		से
यु	न	त	म
	क	पा	स

प्रेमशंकर चौधरी पलगढ़ा
सनिया कला
त
बिलासपुर (म० प्र०)
लाटरी द्वारा)

अंक १३ में प्रकाशित अंतरिक्ष यान प्रतियोगिता का हल

विजेता : सुशील 'शरद'
पी—४०, सी. आई. टी. रोड
स्कीम ६ एम
कलकत्ता—७०००५४
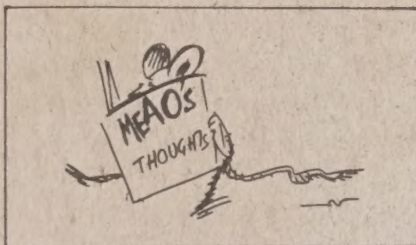
अंक १४ में प्रकाशित दो भाई कहानी का हल

शिक्षाः त्याग से सच्चा सुख प्राप्त होता है।
विजेता : पवन कुमार शर्मा
पन्नी का बड़ बट्टू की बगीची अलवर

शीर्षक सुझाइये का हल

सीख :—देखो तुम दीवाना की परमानेंट ग्राहक बन जाओ मैं मोटू पतलू के साथ तुम्हारी शादी करा दूंगा।

विजेता : विजय कुमार भाटिया
आर० के० कोल डिपो
कनखल (हरिद्वार)

अंक १५ में प्रकाशित पहचानिये प्रतियोगिता का हल

यह सीन फिल्म प्रेम पुजारिन का है
(निर्णय लाटरी द्वारा)
विजेता : कु० रमा जीत सिंह
चन्द्रिका भवन, राम मन्दिर के सामने
हुसेन गंज
लखनऊ—२२६००१

(पृष्ठ १३ से आगे)

'माँ···तुम माँ हो···मैं तुम्हारा स्थान समझती हूं···मेरे हाथों से हंडिया बिगड़ने पर तुम जूतों से पीट सकती हो···रोटियाँ ठोक न पकने पर बाल पकड़ कर मुंह पर थप्पड़ मार सकती हो···लेकिन माँ, मेरे चरित्र पर अगर भगवान भी हमला करेंगे तो मैं उनसे भी निपटना जानती हूं···मैं चट्टान हूं माँ···लोहे की चट्टान।

मां कुछ क्षण तक बड़े आश्चर्य से सरिता को देखती रही। फिर उनकी आँखों में आँसू आ गए···और वह सरिता का हाथ थामकर ममता-भरे स्वर में बोली—

'चल···खाना खा ले···।'

सरिता बड़ी लापरवाही से खाना खाने बैठ गई—।

दूसरे दिन शाम को मोहन विनोद से मिलने आया—मोहन कुछ चिंतित दिखाई पड़ रहा था···उसने विनोद से कहा—

'आओ···होटल में बैठेंगे।'

दोनों होटल की ओर चले आए। विनोद ध्यान से मोहन की ओर देखता रहा···उसे आश्चर्य था कि मोहन जैसा हंसोड़ मन-मौजी भी गंभीर और चिन्ताग्रस्त हो सकता है···उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं आ रहा था···मोहन ने चाय मंगवाई और कई मिनट बैठा कुछ सोचता रहा··· फिर बोला—

'कई दिन से तुमसे कुछ बात कहने की सोच रहा हूं।'

'सोच ही क्यों रहे थे···कह डाली होती, विनोद ने हँसते हुए कहा।

'विनोद—मैं बहुत परेशान हूं।' मोहन ने गंभीरता से कहा।

'वह तो चेहरा ही बता रहा है··· तुम्हारा।'

'विनोद! मैंने एक बड़ा पाप कर डाला है···समझ में नहीं आता उसका प्रायश्चित कैसे करूं?'

'यह प्रारम्भिक प्रस्तावना समाप्त भी होगी या मैं उठ जाऊँ।'

मोहन कुछ देर मौन रहा···फिर उसने उस रात वाला किस्सा दोहरा दिया जब सुरेन्द्र और मोहन ने मिलकर सरिता को चाकू दिखाकर घेर लिया था···विनोद की आँखें फटी-सी रह गईं···।

'और तब से अब तक मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है···।' मोहन ने कहा, 'सरिता कोई औरत नहीं देवी है, उसकी आँखों में जादू है—भगवान कसम—मैं और सुरेन्द्र शारीरिक रूप से ऐसे जरूर थे कि सरिता को काबू में कर लेते—लेकिन उसकी आँखें थीं—विश्वास करो विनोद—मेरा तो रोआँ-रोआँ काँपकर रह गया था—वह हमसे केवल तीन कदम की दूरी पर थी लेकिन हममें साहस नहीं था कि एक कदम भी उसकी ओर बढ़ा लेते···।'

'तुमने बहुत बुरा किया मोहन, कम-से-कम मेरा दोस्त होने के नाते तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, तुमने उसके दिल से अपना विश्वास उठा दिया—और तुम मेरे दोस्त हो तुम्हारे साथ वह मुझे हर रोज देखती है—इससे मेरी पीजीशन पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है—।

'क्या करूँ विनोद, मैं उस समय पागल हो गया था—सुरेन्द्र एक डिक्टेटर है—वह जिससे बातें कर ले चंद मिनट में पूरी तरह उसे अपने जाल में फांस लेता है—और मैं उसकी बातों में आ गया था।'

लेकिन सरिता ने एक बार भी मुझसे इस बात का चर्चा नहीं किया।'

'यही बात तो मुझे खाए जाती है विनोद···कितना साहस है उसमें—कितना धैर्य है—अगर चाहती तो बैठक ही में शोर मचाकर पड़ोसियों को इकट्ठा कर लेती और फिर मेरा और सुरेन्द्र का जो हाल होता वह तुम समझते ही हो—लेकिन उसने केवल आँखों की शक्ति से काम लिया और हमें हार स्वीकार करनी पड़ी—चलते समय उसने यह भी कहा था कि हम अपनी नीचता का विज्ञापन न करें।'

'उफ्···तुमने बहुत बुरा किया मोहन ···सरिता के व्यक्तित्व की ऊंचाई को छूने के लिए देवताओं की सी पवित्रता चाहिए लेकिन एक बार भी जिसके पांव लड़खड़ा चुके हों वह देवताओं के से गुण उत्पन्न नहीं कर सकता···फिर विश्वास प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि तुम सरिता की दृष्टि में वही पहले जैसे मोहन बनो।'

'लेकिन मैं उसकी जबान से केवल यह सुनना चाहता हूं कि उसने मुझे क्षमा कर दिया है·······और जब तक ऐसा नहीं होगा मेरी आत्मा मुझे धिक्कारती रहेगी।'

'और उससे क्षमा मांगने के लिए क्या तुम में इतना साहस होगा कि उसे चलते हुए सड़क पर रोक सको···?'

'फिर मैं क्या करूं विनोद···भगवान के लिए मुझे कोई परामर्श दो···वरना मैं पागल हो जाऊंगा।'

'मैं अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करूंगा।' विनोद ने कहा।

वह चाय पी चुके थे इसलिए उठ गए। दोनों सरिता के बारे में बातें करते हुए गली में खम्भे के पास आ गए और फिर वहीं रुककर बातें करने लगे···वह लोग प्रायः यहीं खड़े होकर बातें किया करते थे···बहुत से लोगों ने कई बार उन्हें यों रास्ते में खड़े होकर बातें करते रहने से टोका भी था कि यह शरीफ लड़कों को शोभा नहीं देता··· किन्तु यह लोग अब आदत से टले नहीं···।'

अभी विनोद और मोहन को खड़े हुए चंद ही मिनट हुए थे कि अचानक सरिता उधर से गुजरी और विनोद को देखकर उसके पास आकर बोली—

'विनोद···मैं यह कहने आ रही थी कि आज पढ़ने न आ सकूंगी।' उसने मोहन की ओर देखा भी नहीं।

'क्यों?' विनोद ने पूछा।

'माँ की तबियत कुछ अच्छी नहीं।'

'बहुत अच्छा।'

सरिता जाने के लिए मुड़ी ही थी कि विनोद ने उसे रोक लिया—।

'सुनो तो सरिता···।'

'क्यों?' सरिता घूमकर खड़ी हो गई।

'तुम मुझे मुहल्ले में सब लड़कों से अलग समझती हो?'

'बात कहो, माँ की तबियत ठीक नहीं और मुझे जल्दी है।'

'मेरी एक बात मानोगी?'

'मान लूंगी।' सरिता के स्वर में विश्वास था।

'इन्हें क्षमा कर दो···।' विनोद ने मोहन की ओर संकेत करते हुए कहा।

'इन्होंने तुम्हें बता दिया सब कुछ।'

'बता दिया···और यह अपनी भूल पर लज्जित हैं।'

'लज्जित हैं तो मेरे क्षमा करने का प्रश्न ही नहीं—क्योंकि पाप पर लज्जित होना ही उसका पश्चाताप है—वैसे तुम्हारे कहने पर मैं अपनी ओर से क्षमा किए देती हूं···लेकिन मेरी एक बात भी सुन लो, इनके

(शेष पृष्ठ ४० पर)